आज की दुनिया में संस्कृति, रुझान और विचारधाराओं से प्रभावित होना आसान है, जो हमें परमेश्वर की सच्चाई से दूर खींचती हैं। लेकिन शास्त्र स्पष्ट है: विश्वासियों को संसार की आत्मा से नहीं, बल्कि परमेश्वर की आत्मा से नेतृत्व मिलना चाहिए। इस आध्यात्मिक भिन्नता को समझना परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन जीने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

दो प्रतिस्पर्धी आत्माएँ

1 कुरिन्थियों 2:10–12 (NIV) में पौलुस लिखते हैं:

“ये वे बातें हैं जो परमेश्वर ने हमें अपनी आत्मा के द्वारा प्रकट की हैं। आत्मा सब कुछ खोजती है, यहां तक कि परमेश्वर
की गहरी बातें भी। क्योंकि कोई व्यक्ति के विचार उसके अपने भीतर की आत्मा को छोड़कर कौन जानता है? उसी तरह, कोई
परमेश्वर के विचारों को नहीं जानता, केवल परमेश्वर की
आत्मा। जो हमें प्राप्त हुआ है वह संसार की आत्मा नहीं है, बल्कि परमेश्वर की आत्मा है, ताकि हम समझ सकें कि परमेश्वर
ने हमें क्या दिया है।”

आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि:
यहाँ पौलुस यह बताते हैं कि केवल मानव मन दिव्य सत्य को समझ नहीं सकता। केवल पवित्र आत्मा—परमेश्वर की अपनी आत्मा—हमें

वह दिखा सकती है जो परमेश्वर चाहते हैं। इसके विपरीत, “संसार की आत्मा” स्वार्थ, भौतिकवाद और परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध बगावत को बढ़ावा देती है।

मनुष्य पर केवल दो आध्यात्मिक शक्तियाँ प्रभाव डालती हैं:

1. परमेश्वर की आत्मा – जो सत्य और जीवन की ओर ले जाती है।
2. संसार की आत्मा – शैतान से प्रभावित, धोखे और विनाश की ओर ले जाती है (2 कुरिन्थियों 4:4 देखें)।

पवित्र आत्मा की भूमिका

येशु ने स्वयं पवित्र आत्मा का वर्णन किया कि वह सत्य में अंतिम मार्गदर्शक हैं।

यूहन्ना 16:13 (NIV)

“लेकिन जब सत्य की आत्मा आएगी, तो वह तुम्हें सब सत्य में मार्गदर्शन करेगी। वह स्वयं से नहीं बोलेगी; केवल वही
बोलेगी जो वह सुनेगी, और आने वाली बातों को तुम्हें
बताएगी।”

आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि:
पवित्र आत्मा केवल सहायक नहीं हैं, बल्कि परमेश्वर की सक्रिय उपस्थिति हैं, जो पिता से सुनी हुई बातें बताती हैं। वह हमारे हृदय और मन को स्वर्ग की योजना के अनुसार संरेखित करते हैं। जो व्यक्ति पवित्र आत्मा द्वारा मार्गदर्शित होता है, वह अलग तरह से जीना शुरू कर देता है—वह पवित्र (संत) बन जाता है, आज्ञाकारिता में जीवन जीता है और मसीह के चरित्र में बढ़ता है (गलातियों 5:22-23)।

आत्मा को अस्वीकार करने का परिणाम

रोमियों 8:9 (NIV) चेतावनी देता है:

“परन्तु आप शरीर के अधीन नहीं हैं, बल्कि आत्मा के अधीन हैं, यदि वास्तव में परमेश्वर की आत्मा आप में रहती है। और यदि किसी के पास मसीह की आत्मा नहीं है, वह मसीह का नहीं है।”

आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि:
मसीह का होना केवल विश्वास की बात नहीं है—यह उनके आत्मा की अन्तर्वासना की उपस्थिति से पहचाना जाता है। यदि किसी में पवित्र आत्मा नहीं है, तो वह आध्यात्मिक रूप से परमेश्वर से कट गया है, चाहे धार्मिक अनुष्ठान या अच्छे इरादे हों।

इसलिए जो व्यक्ति पवित्र आत्मा द्वारा मार्गदर्शित नहीं है, वह स्वाभाविक रूप से सांसारिक व्यवहार अपनाता है: फैशन की दीवानगी, यौन पाप, शराब, लालच, बेईमानी, धन का प्रेम, जादू-टोना आदि (गलातियों 5:19–21)। ये केवल बुरी आदतें नहीं हैं—यह संसार की आत्मा के प्रभाव के आध्यात्मिक लक्षण हैं।

संसार से प्रेम करने का खतरा

1 यूहन्ना 2:15 (NIV) स्पष्ट रूप से कहता है:

“संसार से या संसार की किसी चीज़ से प्रेम मत करो। जो कोई
संसार से प्रेम करता है, उसमें पिता के लिए प्रेम नहीं है।”

आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि:
“संसार से प्रेम करना” का अर्थ है ऐसे मूल्य, लक्ष्य और सुख अपनाना जो परमेश्वर की प्रकृति के विरुद्ध हों। यह केवल भौतिक वस्तुओं के बारे में नहीं है, बल्कि एक ऐसा हृदय है जो स्वयं को परमेश्वर से ऊपर रखता है। यह आध्यात्मिक अंधत्व और परमेश्वर से शाश्वत पृथक्करण की ओर ले जाता है।

आगे का मार्ग: पश्चाताप और नया जीवन

परमेश्वर की आत्मा पाने के लिए व्यक्ति को:

1. पश्चाताप करें – पाप और संसार के मूल्यों से दूर रहें (प्रेरितों के काम 3:19)।
2. बपतिस्मा लें – येशु मसीह के नाम में पानी में पूर्ण डुबकी के माध्यम से पापों की क्षमा के लिए (प्रेरितों के काम 2:38)।
3. संगति और शिष्यता में बढ़ें – ऐसी समुदाय में शामिल हों जहां आप शास्त्र, प्रार्थना और आध्यात्मिक परिपक्वता में बढ़ें।

जब यह परिवर्तन होता है, पवित्र आत्मा आप में वास करेगा, आपको परमेश्वर के बच्चे के रूप में मुहर लगाएगा (इफिसियों 1:13) और आपको पवित्रता, उद्देश्य और आशा के जीवन की ओर मार्गदर्शन करेगा।

अंतिम प्रोत्साहन

ये अंतिम दिन हैं। अब पाप के साथ छेड़छाड़ करने या संसार के साथ समझौता करने का समय नहीं है। अब पवित्र आत्मा से भरा जाने, अलग जीवन जीने और मसीह की वापसी की तैयारी करने का समय है।

परमेश्वर की आत्मा को अपने जीवन को आकार देने दें—क्योंकि जहां परमेश्वर की आत्मा है, वहाँ स्वतंत्रता, शक्ति और अनन्त जीवन है।

शालोम।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp